नेहरू के आर्थिक दर्शन ने दी भारत को नई उड़ान

- राजेश रपरिया

नेहरू जी के कार्यकाल में तीन पंच वर्षीय योजनाएं बनीं। उनमें अल्पकालीन और दीर्घकालीन उद्देश्य का अद्भुत समन्वय था। मसलन, पहली योजना में कृषि विकास, शरणार्थियों के पुनर्वास पर जोर दिया गया। दूसरी परियोजना में तीव्र औद्योगीकरण, विशेषकर मूल और भारी उद्योगों के विकास पर विशेष बल दिया गया। तीसरी योजना में आधार भूत उद्योग, मशीन निर्यात और कृषि में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया। पर चीन और पाकिस्तान से युद्ध छिड़ जाने से प्रतिरक्षा योजना का मूल ध्येय हो गया।

आज अगर हम देश में कोई भी गौरवशाली संस्था देखें, तो वे सब जवाहरलाल नेहरू की आर्थिक दृष्टि और नियोजन की देन है। देश का बुनियादी उद्योग ढांचा हो या विशाल सिंचाई परियोजनाएं, या फिर, शैक्षणिक संस्थान- आईआईटी, आईआईएम या ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स) हों, सब की नींव नेहरू जी के प्रधानमंत्री रहते हुए ही पड़ी। यह कोई आसान काम नहीं था। 1947 में जब देश को आजादी मिली, तब दो सौ सालों की अंग्रेजों की खुली और नियोजित लूटमार ने भारत को खोखला कर दिया था। 1700 के अंत तक भारत दुनिया का सबसे बड़ा निर्यातक देश था लेकिन अंग्रेजों ने भारतीय व्यापार-उद्योगों को तहस-नहस कर दिया और भारत को एक आयातक देश बना दिया। अंग्रेजों ने अपनी एकाधिकारी शक्ति और पूंजी का प्रयोग भारत के प्राथमिक और प्रमुख उद्योगों को अवरुद्ध करने के लिए किया। ब्रिटिश पूंजी और उद्यम केवल उन उद्योगों के विकास तक ही सीमित रहे जिनसे केवल अंग्रेजों के लाभ की पूर्ति होती थी। इससे भारत की कृषि और औद्योगिक क्षेत्र का मजबूत संतुलन खत्म हो गया। नतीजन भारतीय अर्थव्यवस्था गरीबी के दुष्चक्र और पिछड़ेपन का एक दयनीय उदाहरण बन कर रह गई। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि देश जब आजाद हुआ, तब 7 लाख में से केवल डेढ़ हजार गांवों में ही बिजली थी। रेल यातायात का ढांचा काफी मजबूत होने की वजह यह थी कि भारतीय आर्थिक संसाधनों के अधिकाधिक दोहन के लिए अंग्रेजों को रेल यातायात की सख्त जरूरत थी। नेहरू जी ने देश के विकास के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था का रास्ता अपनाया जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र की अहम भूमिका थी। इसके माध्यम से लोकतांत्रिक समाजवाद के उद्देश्यों को हासिल और संरक्षित करने के नेहरू जी के प्रयास बेमिसाल हैं। आजादी के समय देश में बुनियादी उद्योगों और सामाजिक सुविधाओं का घनघोर अभाव था और देश का निजी क्षेत्र इतना सशक्त और समृद्ध नहीं था कि वह पूंजी मूलक बुनियादी ढांचे और उद्योगों में भारी निवेश कर सके। 1951 में भारत सरकार के बजट का कुल परिव्यय महज 315 करोड़ रुपये था। पहली पंचवर्षीय योजना का कुल व्यय लक्ष्य 2069 करोड़ रुपये था। इस परियोजना के समय चितरंजन लोकोमोटिव, इंटिग्रल कोच फैक्ट्री, राउरकेला, भिलाई और दुर्गापुर इस्पात संयंत्रों की नींव रखी गई। देश की सबसे ऊंची सिंचाई परियोजना भाखड़ा और नांगल भी इसी दौरान पूरी हुई। ये सब संस्थान आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था के मजबूत आधार स्तंभ हैं।

नेहरू जी के कार्यकाल में ही इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए आईआईटी, प्रबंधन पढ़ाने के लिए आईआईएम और मेडिकल की पढ़ाई के लिए एम्स की नींव रखी गई जिनमें प्रवेश पाना आज भी इच्छुक छात्रों का सबसे बड़ा सपना होता है। यह आलोचना भी बेबुनियाद है कि नेहरू जी ने कृषि की उपेक्षा की। नेहरू जी का नजरिया बहुत साफ था कि हमें यह बात समझनी होगी कि कृषि उन्नति एवं प्रगति के बिना औद्योगिक प्रगति प्राप्त नहीं की जा सकती है। इनमें गहरा संबंध है क्योंकि कृषि की प्रगति उद्योग की प्रगति के बिना संभव नहीं है। कारण यह है कि इसके लिए नए औजार, नई विधियां और नई तकनीकें चाहिए। नेहरू जी इस तथ्य से पूरी तरह वाकिफ थे कि कृषि विकास में विफलता औद्योगिक प्रगति को अवरुद्ध कर देगी। इसलिए पहली पंचवर्षीय योजना में कृषि, सिंचाई और

किसानों को पूरी तवज्जो दी गई। देश में भूमि सुधारों से पुरातन काल से चली आ रही सामंतवादी सामाजिक-आर्थिक प्रणाली को समाप्त करके कृषि उत्पादन और किसानों के आर्थिक- सामाजिक स्तर सुधारने के लिए भागीरथी प्रयत्न किए गए और 1952 में जमींदारी प्रथा का उन्मूलन कर दिया गया। इसलिए नेहरू जी पर कृषि की उपेक्षा करने के आरोप आधारहीन हैं। नेहरू जी के कार्यकाल में तीन पंचवर्षीय योजनाएं बनीं। उनमें अल्पकालीन और दीर्घकालीन उद्देश्य का अद्भुत समन्वय था। मसलन, पहली योजना में कृषि विकास, शरणार्थियों का पुर्नवास पर जोर दिया गया। दूसरी परियोजना में तीव्र औद्योगीकरण, विशेष कर मूल और भारी उद्योगों के विकास पर विशेष बल दिया गया। तीसरी योजना में आधारभूत उद्योग, मशीन निर्यात और कृषि में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया। पर चीन और पाकिस्तान से युद्ध छिड़ जाने से प्रतिरक्षा योजना का मूल ध्येय हो गया। नेहरू कालीन आर्थिक नीतियों का सदैव यह उद्देश्य रहा कि समाज में सबको प्रगति के समान अवसर मिलें, आय और संपत्ति में असमानताएं कम हों, सार्वजनिक और सहकारी क्षेत्र विकास में उच्च प्राथमिकता मिले, आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण और एकाधिकारी प्रवृत्तियों को पनपने से रोकने के लिए समुचित और समग्र प्रयास हों, और नियोजन में निजी हितों के बजाए सामाजिक लाभों को निर्णय का आधार बनाया जाए। इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करने के लिए नेहरू जी ने सार्वजनिक क्षेत्र की मजबूत नींव रखी जिसकी परिसंपत्तियां बेच कर पिछले कई सालों से सरकारें अपना गुजारा कर रही हैं। इसके तमाम उदाहरण विगत वर्षों में मिल जाएंगे। नरेंद्र मोदी, नेहरू की नीतियों की असम्मानजनक आलोचना तो करते हैं लेकिन वह धुर बाजारवादी हैं और उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र पर पिछली सरकारों से कम यकीन है। मसलन, भारत पेट्रोलियम लाभ कमाने वाला सार्वजनिक उपक्रम है। यह देश की दूसरी सबसे बड़ी रिफाइनरी है। मोदी सरकार ने इस कंपनी में सारी सरकारी अंशधारिता को बेचने का निर्णय लिया है। देश में तेल और गैस उत्पादक सरकारी कंपनियों के पूर्ण बिक्री पर कई तरह की कानूनी बंदिशें भी थीं लेकिन मोदी सरकार ने संसद में काननू पारित कर इन सभी बंदिशों को समाप्त कर दिया है। इससे ही प्रधानमंत्री मोदी के आर्थिक दर्शन को समझना आसान हो जाता है। ऐसा लगता है कि मोदी सरकार जल्द-से-जल्द सार्वजनिक क्षेत्र से छटकारा पाना चाहती है।

भारतीय रेल इसका ताजा उदाहरण है। बजट के लिए पूंजी की जरूरत होती है और इसके लिए मोदी सरकार को लाभकारी सरकारी उपक्रमों को बेचना पड़ रहा है। एक सरकारी उपक्रम दूसरे सरकारी उपक्रम को खरीद रहा है। हाल ही में ओएनजीसी ने एचपीसीएल की सरकारी अंशधारिता को खरीदा है। कुल मिलाकर, यह मोदी सरकार के आर्थिक कुप्रबंधन को दर्शाता है। नेहरू का आर्थिक दर्शन आर्थिक शक्तियों के संकेंद्रण और एकाधिकारीवादी प्रवृतियों के खिलाफ था। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी को इन प्रवृत्तियों से कोई विरोध नहीं है। मोदी का कहना है कि संपदा निर्माण करने वालों का सम्मान होना चाहिए। मोदी के शुरुआती शासन में ऐसा भ्रम फैला था कि उनकी सरकार कल्याणकारी अर्थशास्त्र को बढ़ावा देगी लेकिन बाद के वर्षो में जितनी रियायतें और लाभ कॉरपोरेट सेक्टर को दिए गए, उनसे उनके आर्थिक दर्शन पता चल जाता है। इतिहास में नेहरू जी को मिश्रित अर्थव्यवस्था, मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र और विशाल सार्वजनिक परियोजनाओं के लिए याद किया जाएगा, तो प्रधानमंत्री मोदी को लोग नोटबंदी और बड़े उद्योपतियों के संरक्षण के लिए भूल नहीं पाएंगे।

(लेखक पूर्व कार्यकारी संपादक हैं। साभार नवजीवन। प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।